Toppersnotes®
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

सामाजिक विज्ञान

द्वितीय – प्रश्न पत्र

भाग – 3

राजनीति विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजनीति विज्ञान एवं राजनीति सिद्धान्त	1
2	भारतीय संविधान का निर्माण	33
3	संविधान की मुख्य विशेषताएँ	39
4	मौलिक अधिकार	42
5	राज्य के नीति के निदेशक तत्व	61
6	संवैधानिक संशोधन	67
7	संघीय प्रणाली	69
8	केन्द्र राज्य संबंध	72
9	राज्य विधानमंडल	82
10	राष्ट्रपति	91
11	उपराष्ट्रपति (उपाध्यक्ष)	97
12	प्रधान मंत्री	99
13	केन्द्रीय मंत्रिपरिषद्	101
14	संसद	105
15	राज्यपाल	134
16	मुख्यमंत्री	138
17	भारतीय न्यायिक प्रणाली	140
18	भारत की विदेश नीति	156
19	संयुक्त राष्ट्र संघ	168

1 CHAPTER राजनीति विज्ञान एवं राजनीति सिद्धान्त

- राजनीति शब्द अंग्रेजी के Politics का हिन्दी रूपान्तरण है। Politics शब्द यूनानी भाषा के Polis (पॉलिस) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है। नगर – राज्य।
- ईसा से 500 वर्ष पूर्व यूनान के नगर—राज्यों के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम पॉलिस शब्द का प्रयोग किया गया।
- अरस्तु की पुस्तक - Politics

आधुनिक संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा राजनीति के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया है जो निम्न है -

- कार्ल मार्क्स - राजनीति को "अधः संरचना" की संज्ञा दी।
- डेविड ईस्टन - राजनीति को "मूल्यों के आवंटन" की संज्ञा दी।
- बैंजामिन फ्रैंकलिन - राजनीति को "धूर्तो का अन्तिम आश्रय स्थल" कहा।
- वर्तमान समय में राजनीति एक मानवीय प्रक्रिया है। मनुष्य के द्वारा अपने हितो की पूर्ति के लिए अनेक कदम उठाये जाते हैं उन्ही के सामूहिक रूप को राजनीति की संज्ञा दी जाती है।
- यूनान से प्रारम्भ राजनीति शास्त्र की गणना प्राचिन विज्ञानो में की जाती है लेकिन अभी तक इसके अर्थ, परिभाषा तथा क्षेत्र को लेकर विद्वानों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है। राजनीति शास्त्र के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे - राजनीति, राजनीति विज्ञान, राजनीति दर्शन, राजनीति सिद्धान्त आदि।
- गार्नर के अनुसार - "राजनीति शास्त्र की उत्तनी हि परिभाषाऐं है जितने की इसके लेख है।"
- जेलिनेक के अनुसार - "किसी भी विषय को अच्छी शब्दावली की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं है जितनी की राजनीति शास्त्र को है।"

राजनीति विज्ञान

- सितम्बर, 1948 में यूनेस्को में हुए राजनीति विज्ञान के विद्वानों का सम्मेलन हुआ जिसमें इस विषय का नामकरण "राजनीति विज्ञान" किया गया।
- राजनीति विज्ञान का जनक अरस्तु को माना जाता है।
- राजनीति विज्ञान की प्रारम्भिक अभिव्यक्ति भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों विचारको में होती है।
- भारतीय विचारको में मनु व कौटिल्य के विचारों में सर्वप्रथम राजनीति विज्ञान की अभिव्यक्ति होती है।
- कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में दण्ड का सिद्धान्त प्रतिपादित किया तथा यही दण्ड सिद्धान्त वस्तुतः आज का राजनीति विज्ञान है।
- पाश्चात्य जगत में सर्वप्रथम अरस्तु के द्वारा 158 देशों के संविधान का तुलनात्मक परीक्षण करके राजनीति विज्ञान का प्रतिपादन किया गया।
- अरस्तु ने राजनीति विज्ञान को "सर्वोच्च विज्ञान" की संज्ञा दी।
- आधुनिक संदर्भ में राजनीति विज्ञान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम "गॉडविन व मेरी बुल्सट्रोनेक्राफ्ट" के द्वारा किया गया।

- राजनीति विज्ञान के अर्थ, परिभाषाओं तथा क्षेत्र को लेकर दो दृष्टिकोण प्रचलित हुए

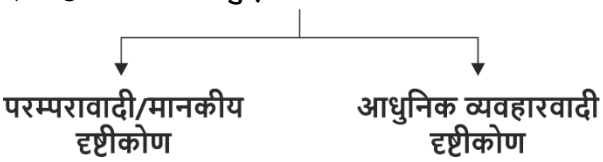

परम्परावादी दृष्टिकोण

ईसा पूर्व 6 शताब्दी से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध तक का समय परम्परावादी दृष्टिकोण का माना जाता है।

- यह दृष्टिकोण कल्पनात्मक एवं आदर्शनात्मक है जो मूल्यो पर विशेष बल देता है।
- यह नैतिक दृष्टिकोण है अर्थात् इसका संबंध "क्या होना चाहिए" से है।
- इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक प्राणी बनाना तथा आदर्श राज्य की स्थापना करना था।
- परम्परावादी दृष्टिकोण के अर्थ को स्पष्ट करनें के लिए इसे 4 भागों में बाँटा गया है -

1. राज्य का अध्ययन

मैकियावली ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक "द प्रिंस" में राज्य शब्द का प्रयोग किया। इसके समर्थको का मानना है कि राजनीति केवल राज्य का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत राज्य की उत्पत्ति, उसका स्वरूप, राज्य का अन्य संस्थाओ के साथ संबंध एवं राज्य के भविष्य का अध्ययन किया जाता है।

परिभाषाएँ

- गार्नर के शब्दो में "राजनीति विज्ञान का प्रारम्भ एवं अतं राज्य के साथ होता है।"
- गैटेल - "राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है तथा इसके अन्तर्गत राज्य के अतीत, वर्तमान, भविष्य का तथा राजनीतिक संगठन एवं संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।"
- जेम्स के अनुसार "राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है।"
- एलंटशली के अनुसार "राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसका संबंध राज्य से है जो यह समझाने का प्रयास करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या है, उसका संगठन क्या है, उसकी प्रकृति एवं विकास को समझने का प्रयत्न करता है।"

2. सरकार का अध्ययन

- इसके समर्थको का मानना है कि राज्य एक अमूर्त तत्व है जिसका मूर्त तत्व/स्वरूप सरकार होता है।
- राज्य की इच्छाओ की वास्तविक क्रियान्विति सरकार के द्वारा ही की जाती है। अतः राजनीति विज्ञान केवल सरकार का अध्ययन करता है।

परिभाषाएँ

(i) सीले के अनुसार "राजनीति शास्त्र सरकार संबंधी तत्वों का ठीक उसी प्रकार अध्ययन करता है जैसे कि अर्थशास्त्र सम्पत्ति का जीवविज्ञान जीवन का।"

(ii) लीकॉक - "राजनीति विज्ञान केवल सरकार से संबंधित विषय है।"

(iii) पॉलजैनेट - "राजनीति शास्त्र सामाजिक शास्त्र का वह भाग है जिसमें राज्य के आधार तथा शासन के सिद्धांतो पर विचार किया जाता है।"

3. राज्य तथा सरकार दोनो का अध्ययन

इसके समर्थको के अनुसार राज्य तथा सरकार के बीच कोई विरोध नहीं हैं एवं दोनों एक दूसरे के पूरक होते है।
इसलिए राजनीति विज्ञान में राज्य तथा सरकार दोनों का अध्ययन किया जाता है।

परिभाषाएँ

1. गिलक्रइस्ट - "राजनीति विज्ञान में राज्य तथा सरकार दोनो की सामान्य समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।"
2. पॉलजैनेट - "राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र का वह भाग है जिसमें राज्य के आधार तथा सरकार के सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।"
3. डिमॉक - "राजनीति विज्ञान का संबंध राज्य तथा उसके यंत्र सरकार से है।"
4. मानवीय तत्व - व्यक्ति राजनीति विज्ञान की आधारभूत इकाई है तथा राजनीति विज्ञान में राज्य, सरकार तथा अन्य संस्थाओं का अध्ययन इसलिए किया जाता है क्योंकि ये सभी मनुष्य के कार्य करती है।

परिभाषाएँ

(i) लॉस्की के अनुसार "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का संबंध संगठित राज्यों से संबंधित मनुष्य के जीवन से है।"

(ii) हरमन टेलर - राजनीति विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूप का निर्धारण उसकी मुनष्य संबंधी मान्यताओं से होता है।

- इस प्रकार परम्परावादी दृष्टिकोण के अनुसार राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानव जीवन के राजनीति पक्ष का तथा इस पक्ष से जुड़े होने के कारण राज्य, सरकार तथा अन्य संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।
- परम्परावाद के अनुसार राजनीति विज्ञान का क्षेत्र
- फ्रेडरिक पॉलक ने दो भागों में बाँटा

सैद्धांतिक राजनीति — **व्यवहारिक राजनीति**

- विलोबी ने राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में राज्य, शासन, कानून को शामिल किया।
- परम्परावादी दृष्टिकोण की विशेषताएँ
  (i) आदर्शात्मक तथा कल्पनात्मक है।
  (ii) नैतिकता तथा मूल्यों पर विशेष बल
  (iii) कानूनी, औपचारिक संस्थाओं के अध्ययन पर बल
  (iv) वर्णात्मक एवं विवरणात्मक
  (v) संकीर्ण अध्ययन अर्थात् केवल विकसित देशों से संबंधित अध्ययन
  (vi) अध्ययन पद्धति - निगमनात्मक

परम्परावादी दृष्टिकोण के पतन के कारण

(i) मूल्यों पर अत्यधिक बल
(ii) इतिहासवाद का होना
(iii) संस्थाओं के अध्ययन पर बल
(iv) अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति न अपनाना

नोट - आधुनिक समय में परम्परावाद दृष्टिकोण के समर्थक - सर्बाइन, लियो स्ट्रॉस, हन्ना ऑरेन्ट, अल्फ्रेड क्रॉबल, डंनिग, माइकल, ऑकशोट आदि।

आधुनिक दृष्टिकोण

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परम्परावादी दृष्टिकोण के विरोध में आधुनिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।
- कैटलिन, लॉसवैल, रार्बट डहल, डेविड ईस्टन, आमण्ड और पावैल आदि आधुनिक दृष्टिकोण के प्रमुख समर्थक है।
- आधुनिक दृष्टिकोण में समस्त मानवीय व्यवहार के अध्ययन पर बल दिया जाता है।
- इसमें राजनीति विज्ञान के नवीन विषयों जैसे - शक्ति, सत्ता, वैधता, राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक विकास आदि का अध्ययन किया जाता है।
- आधुनिक दृष्टिकोण "अंतः अनुशासनात्मकता" पर बल देता है।
- राजनीति विज्ञान का अध्ययन अन्य समाज शास्त्रों के साथ जोड़ कर करता है।
- आधुनिक दृष्टिकोण यथार्थवादी है तथा अनुभववादी है।
- इसमें वैज्ञानिकता पर बल दिया गया है। मूल्यों की अपेक्षा की गयी है।
- इसका संबंध "क्या है" से है।

प्रमुख विशेषताएँ

(i) वैज्ञानिकता पर बल
(ii) मूल्य निरपेक्षता
(iii) यथार्थवादी अध्ययन
(iv) तथ्यो पर बल
(v) अन्तः अनुशासनात्मक
(vi) व्यापक अध्ययन - विकासशील एवं विकसित तथा अल्प विकसित देशों का अध्ययन
(vii) अध्ययन पद्धति - आगमनात्मक

व्यवहारवादी क्रांति

- व्यवहारवादी उपागम राजनीतिक तथ्यों की व्यवस्था और विश्लेषण का एक विशेष तरीका है।
- द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका के राजनीतिशास्त्र के जगत् में एक नवीन उपागम का आविर्भाव हुआ जिसे व्यवहारिकतावाद के नाम से जाना गया है।
- व्यवहारवाद मनोविज्ञान का विषय है जिसमें प्राणियों के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।
- इसका मुख्य उद्देश्य राजनीति विज्ञान को एक विज्ञान बनाना है।
- यह अनुभवात्मक तथा क्रियात्मक उपागम है।
- 1908 में ग्राहम वालास तथा बैंटले ने अपने ग्रन्थ "ह्यूमन नेचर इन पोलिटिक्स" तथा "द प्रोसेस ऑफ गर्वनमेन्ट" में सर्वप्रथम राजनीति विज्ञान में संस्थाओं के अध्ययन की उपेक्षा की तथा मानवीय व्यवहार पर बल दिया।
- बेंटले - ने परम्परावादी राजनीति दृष्टिकोण को "मृत अथवा बंजर राजनीति" की संज्ञा दी।
- लार्ड ब्राइस ने अपनी पुस्तक मॉडर्न डेमोक्रेसी में सर्वप्रथम यह प्रतिपपादित किया कि हमें केवल तथ्य और केवल तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए।
- फ्रेंक केन्ट - ने अपनी पुस्तक "द पॉलिटिक्स बिहेवियर" में सर्वप्रथम व्यवहारवाद शब्द का प्रयोग किया।
- चार्ल्स ई. मेरियम - ने 1925 ई. में अपनी पुस्तक "न्यू असपैक्टस ऑफ पॉलिटिक्स" में सर्वप्रथम मानवीय व्यवहार के सैद्धान्तिक पक्ष का विश्लेषण किया।
- इसीलिए मेरियम को व्यवहारवाद का प्रर्वतक तथा बौद्धिक पिता की संज्ञा दी जाती है।
- व्यवहार के समर्थक :- डेविड ईस्टन, डेविड ऐप्टर, बर्गेस, मॉर्टिन, बरमिंघम, पॉवेल, लॉसवेल, रॉबर्ट डहल आदि ।
- व्यवहारवाद के सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक दोनों पक्षों का समग्र विश्लेषण डेविड ईस्टन ने किया।
- डेविड ईस्टन ने अपनी पुस्तक "द करेन्ट मिंनिंग ऑफ बिहेवियर लिज्म" में व्यवहारवाद के कुल 8 लक्षण स्वीकार किये है जिन्हें व्यवहारवाद की "बौद्धिक आधारशिला" के नाम से जाना जाता है।
  (i) नियमन
  (ii) सत्यापन
  (iii) तकनीकी प्रयोग
  (iv) परमाणी क्रम
  (v) विशुद्ध विज्ञान
  (vi) मूल्य निरपेक्षता
  (vii) क्रमबद्धी करण / व्यवस्थापन
  (viii) एकीकरण / समग्रता

व्यवहारवाद की सीमाएँ

(i) मानव व्यवहार की नियमितता योजना असम्भव
(ii) तकनीक एवं पद्धतियों पर अत्यधिक बल अनुचित
(iii) मूल्य निरपेक्षता पर बल
(iv) निष्पक्ष अध्ययन नहीं
(v) अत्यधिक खर्चीली पद्धति
(vi) राजनीति विज्ञान का विशुद्ध विज्ञान सम्भव नहीं
(vii) परिमाणीकरण की समस्या
(viii) अध्ययन हेतु अन्य पद्धतियों की उपेक्षा अनुचित।

उत्तर व्यवहारवाद

सितम्बर, 1969 में न्यूयॉर्क में "अमेरिकन पॉलिटिकल सांइस एसोसिएशन" की अध्यशता ईस्टन ने की तथा अपने भाषण में व्यवहारवाद की आलोचना की और उत्तर व्यवहारवाद का प्रतिपादन किया।

- डेविड ईस्टन को उत्तर व्यवहारवाद का जनक माना जाता है।
- उत्तर व्यवहारवाद के द्वारा मूल्यों पर फिर से जोर दिया गया। इनके द्वारा मुख्यतः दो बातों पर विशेष बल दिया गया।
  (1) कर्म,
  (2) प्रासांगिकता

ईस्टन ने उत्तर व्यवहारवाद के कुल 7 लक्षण प्रतिपादित किये जिन्हें "प्रासंगिकता के सिद्धान्त" कहा जाता है।
(i) तकनीकी की तुलना में सार को प्राथमिकता
(ii) समस्याओं के विश्वसनीय समाधान पर बल
(iii) कर्म निष्ठ विज्ञान पर बल
(iv) व्यवसाय का राजनीतिकरण
(v) बुद्धि जीवियों की भूमिका
(vi) मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका
(vii) सामाजिक परिवर्तन पर बल

राजनीति विज्ञान की प्रकृति

- **राजनीति विज्ञान एक विज्ञान नहीं है**
- **राजनीति विज्ञान एक विज्ञान है**
- **राजनीति विज्ञान, विज्ञान तथा कला है**
- **राजनीति एक कला है**

1. राजनीति विज्ञान एक विज्ञान नहीं है

- विज्ञान की वह राशि जो कि क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित हो जिसके निष्कर्षो में प्रमाणिकता विद्यमान हो एवं जिसमें पर्यवेक्षण तथा परीक्षण की क्षमता विद्यमान हो परन्तु राजनीति शास्त्र में इसका अभाव पाया जाता है।
- इसलिए ब्राइस, बंकल, काम्पटे, बियर्ड, मैटलैण्ड, मोस्का कैटलिन आदि ने विज्ञान मानने से इनकार कर दिया।
- बंकल - "ज्ञान की वर्तमान अवस्था में राजनीति का विज्ञान बनना तो दूर वह कलाओं में भी पिछड़ी हुई कला है।"
- मैकलैण्ड - जब भी मैं राजनीति विज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत प्रश्नों को देखता हूँ तो मुझे प्रश्नों से नहीं अपितु शीर्षक से उलझन होती है।
- ब्राइस - राजनीति के लिए विज्ञान बन पाना असंभव है।
- कैटलिन - अभी तक किसी भी मान्य अर्थ में राजनीति एक विज्ञान नहीं बन पाया।

इनके तर्क

(I) राजनीति विज्ञान का ज्ञान क्रमबद्ध व व्यवस्थित नहीं है।

(II) राजनीति विज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा को लेकर विद्वानों में सहमति का अभाव है।

(III) राजनीति विज्ञान में भविष्यवाणी की क्षमता नहीं है।

2. राजनीति विज्ञान एक विज्ञान है -

अरस्तु, बोंदा, हॉब्स, बेन्थम, ब्लांशली, गार्नर, लॉस्की, पॉलक आदि इसके समर्थक है।

अरस्तु - राजनीति विज्ञान को सर्वोच्च विज्ञान की संज्ञा दी।

पॉलक - जिस प्रकार नैतिकता का विज्ञान होता है उसी प्रकार राजनीति भी एक विज्ञान है।

इन्होनें निम्न तर्क दिये -

(I.) राजनीति विज्ञान में सर्वमान्य तथ्यों का विकास हुआ है।

(II.) राजनीति विज्ञान में कार्य तथा कारण में संबंध स्थापित किया।

(III.) राजनीति विज्ञान में यद्यपि स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी नहीं की जा सकती परन्तु सम्भावनाएँ व्यक्त की जा सकती है।

(IV.) राजनीति विज्ञान का ज्ञान क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित है।

3. राजनीति विज्ञान एक कला है

ब्लांशली ने राजनीति को विज्ञान की अपेक्षा कला अधिक माना।

बिस्मार्क - राजनीति को संभावनाओं की कला माना।

कैटलिन - इन्होनें कला, दर्शन, विज्ञान तीनों रूपों में स्वीकार किया।

- कला उद्देश्य मानव जीवन को सुन्दर बनाना होता है तथा इस अर्थ में राजनीति एक कला है क्योंकि इसके अन्तर्गत अनेक ऐसी व्यवहारिक बातों का विश्लेषण किया जाता है जिसका संबंध मनुष्य के आदर्श जीवन से है।

4. राजनीति विज्ञान कला एवं विज्ञान दोनों है

वर्तमान में राजनीति विज्ञान का यह सर्वमान्य मत है।

जब राजनीति विज्ञान मानव जीवन के सैद्धान्तिक पक्ष का विश्लेषण करती है तब इसे विज्ञान तथा व्यवहारिक रूप देने का प्रयास करती है तब इसे कला की संज्ञा दी जाती है।

ट्रिटस्के - ने सर्वप्रथम राजनीति विज्ञान को विज्ञान एवं कला दोनों की संज्ञा दी।

शक्ति

- राजनीति विज्ञान की महत्वपूर्ण अवधारणाओं में शक्ति एक प्रमुख अवधारणा है जो कि प्राचीनकाल से ही चली आ रही है।
- भारतीय विचारकों में सर्वप्रथम कैटिल्य ने दण्ड सिद्धान्त का प्रतिपादन किया । इसी सिद्धान्त में सर्वप्रथम शक्ति की अभिव्यक्ति होती है।
- पाश्चात्य विचारकों में मैक्यावली ने अपनी पुस्तक "द प्रिंस" के अन्तर्गत सर्वप्रथम शक्ति की विस्तृत व्याख्या की।
- राजनीति विज्ञान में परम्परावादी दृष्टिकोण के स्थान पर आधुनिक दृष्टिकोण के समर्थकों ने शक्ति पर बल दिया तथा उसे राजनीति की विषय वस्तु में शामिल किया।
- आधुनिक संदर्भ में कैटलिन प्रथम ऐसे विचारक थे जिन्होनें शक्ति के सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक दोनों पक्षों पर बल दिया। यह प्रतिपादित किया कि राजनीति विज्ञान शक्ति का विज्ञान है।
- बेकर - ने राजीति को शक्ति से "अपृथकरणीय" माना।
- हॉब्स - शक्ति को मानव स्वभाव की एक विशेलषता के रूप में स्विकार किया।
- लॉर्ड एक्टन - शक्ति भ्रष्ट करती है तथा निरपेक्ष शक्ति पूर्ण भ्रष्ट करती है।
- उपर्युक्त विद्वानो ने शक्ति को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिपादित किया।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शक्ति को प्रतिपादित करने का श्रेय मॉरगेन्थाऊ को है।
- मॉरगेन्थाऊ के अनुसार हर प्रकार की राजनीति चाहे घरेलू हो या अन्तर्राष्ट्रीय, शक्ति के लिए संघर्ष है। मॉरगेन्थाऊ अपनी पुस्तक "पॉलिटिकस एमगं नेशन्स" में यह प्रतिपादित किया कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शक्ति का वही स्थान है जो कि अर्थव्यवस्था में मुद्रा का होता है।

शक्ति का अर्थ

- राजनीति विज्ञान में शक्ति का अभिप्राय राजनीतिक शक्ति से है जिसका अभिप्राय है कि अन्य मनुष्यों के मस्तिष्क कार्यो पर नियन्त्रण स्थापित कर लेना है।
- मैकाइवर के अनुसार "शक्ति नियंत्रण की क्षमता है।"
- शक्ति साध्य एवं साधन दोनों है।
- ऑर्गेन्सकी - "शक्ति दूसरो के कार्यो को अपने लक्ष्यो के अनुसार प्रभावित करने की च्मता है।"
- माइकल फूको "शक्ति ही ज्ञान है अर्थात ज्ञान ही शक्ति है।"
- पिफनर - "शक्ति आदेश देने की क्षमता है।"
- लासवैल - इन्होनें अपनी पुस्तक "पॉलिटिकस हू गैटस, वॉट वेन एण्ड हाऊ" में शक्ति का विवरणात्मक रूप से अध्ययन किया।

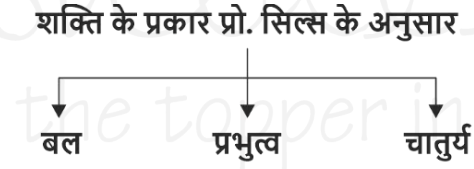

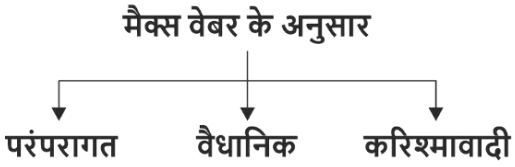

1. **परम्परागत शक्ति -** जब शक्ति का प्रयोग परम्पराओं के अनुसार रीति-रिवाज एवं सामाजिक मान्यताओं के अनुसार हो।
2. **वैधानिक शक्ति -** जब शक्ति का प्रयोग कानून, विधि—विधान, नियम अथवा संविधान के अनुरूप करता हो उसे वैधानिक शक्ति कहते है।
3. वर्तमान मे शक्ति का यही रूप प्रचलित है।
4. **करिश्मावादी शक्ति -** जब शक्ति का प्रयोग किसी के गुण, नेतृत्व, लोकप्रियता के आधार पर किया जाता हो।
   - "राजनीति विज्ञान शक्ति का विज्ञान है"- केटलिन

शक्ति के स्त्रोत

(I) ज्ञान
(II) संगठन
(III) विचार, विश्वास, कर्म
(IV) प्राप्तियाँ एवं उपलब्धियाँ
(V) सत्ता - शक्ति + वैधता
(VI) परिर्थितियाँ

वैधता (औचित्य पूर्णता)

- किसी भी राजनीति व्यवस्था के लिए वैधता सबसे अनिवार्य तत्व माना जाता है क्योंकि इसी के द्वारा राजनीतिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान किया जाता है।
- उसे न्यायसंगत बनाया जाता है।

अमर्यादित शक्ति को सत्ता में परिवर्तित करने के लिए वैधता सबसे अनिवार्य तत्व होता है।
Legitimacy शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Legitimus शब्द से हुई है जिसका प्राय है कि कानून की दृष्टि से उचित या जनसहमती पर आधारित शासन है।
वैधता एक मनोवैज्ञानिक तत्व है जो कि शासन शासित के बीच मूल्यों, विश्वास पर आधारित है।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार -

- प्लेटो - वैधता का आधार "न्याय सिद्धान्त" को माना प्लेटो के अनुसार अपने कर्त्तव्यों का पालन करना तथा दूसरे के कार्यो में हस्तक्षेप ना करना ही न्याय सिद्धान्त है।
- अरस्तु - "विधि के शासन को" वैधता का आधार माना।
- एक्विनास - "बौद्धिक वर्ग" के शासन को वैधता का आधार माना।
- हॉब्स - "निरकुंश तथा असमित शासन" को माना ।
- लॉक - "सिमित तथा मर्यादित" शासन को माना।
- रूसो - "सामान्य इच्छा आधरित शासन" को माना।
- मार्क्स - ने वर्ग विहिन तथा राज्य विहिन समाज को वैधता का आधार माना।

वैधता के प्रकार —

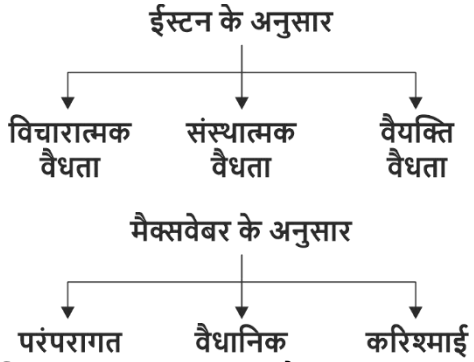

लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में वैधता की सबसे अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि लोकतंत्र में शासन की अन्तिम शक्ति जन साधारण में निहित होती है जिसका प्रयोग जनता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से करती है ।
हैबरमास ने अपनी पुस्तक "वैधता पर संकट" के अन्तर्गत सर्वप्रथम पूँजीपति शासन में वैधता के संकट को उजागर किया।

वैधता के लक्षण/ विशेषताएँ

(I) वैधता शक्ति को सत्ता में परिवर्तित करती है।
(II) वैधता शासन व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करती है।
(III) वैधता मानवीय तथ्य है।
(IV) वैधता सामाजिक स्वीकृति पर आधारित है।
(V) वैधता न्यायसंगत का केन्द्रीय बिन्दू है।

सम्प्रभुता

- सम्प्रभुता राजनीति विज्ञान की अनिवार्य अवधारणा है एवं राज्य का सबसे अनिवार्य तत्व है क्योंकि सम्प्रभुता के कारण ही राज्य आन्तरिक दृष्टि से सर्वोच्च तथा बाह्य दृष्टि से स्वतन्त्र होता है।
- Soverngnity शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Superauns से हुई है जिसका अभिप्राय है "सर्वोच्च सत्ता"।
- राज्य की सर्वोच्च सत्ता को ही सम्प्रभुता की संज्ञा दी जाती है।
- सम्प्रभुता का अर्थ "आदेश देने की शक्ति" से है।
- सर्वप्रथम बोंदा ने अपनी पुस्तक "सिक्स बुक कन्सर्निंग द रिपब्लिक" में सम्प्रभुता शब्द का प्रयोग किया।
- बोंदा — " सम्प्रभुता नागरिकों तथा प्रजा जनों पर वह सर्वोच्च शक्ति है जिस पर कानून का कोई नियत्रण नहीं होता है।"
- गार्नर - "सम्प्रभुता राज्य की ऐसी विशेषता है जिसके कारण वह इच्छा के अलावा अन्य किसी से भी सीमित नहीं होती है।"
- विलोबी - "सम्प्रभुता को राज्य की सर्वोच्च इच्छा माना है।"

गिलक्राइट - "सम्प्रभुता को राज्य की सर्वोच्च शक्ति माना है।"
लॉस्की - "सम्प्रभुता के कारण ही राज्य अन्य सभी समुदायों से पृथक होता है।"

सम्प्रभुता के लक्षण

(I) पूर्णता
(II) सार्वभौमिकता
(III) अदेयता
(IV) स्थायित्व
(V) अविभाज्यता

सम्प्रभुता के प्रकार

(I) नाममात्र तथा वास्तविक सम्प्रभुता
(II) वैधानिक एवं लोकप्रिय सम्प्रभुता
(III) विधि सम्मत तथा तथ्य सम्मत सम्प्रभुता
(IV) आन्तरिक व बाह्य सम्प्रभुता

1. नाममात्र तथा वास्तविक सम्प्रभुता :नाममात्र का सम्प्रभु वह सम्प्रभु होता है जिसके नाम से शासन किया जाए।
2. जैस- इग्लैण्ड की महारानी व भारत का राष्ट्रपति।
3. वास्तविक सम्प्रभु वह है जो सैद्धान्तिक के साथ शासन की वास्तविक शक्ति का उपयोग करता है।
4. जैसे - भारत का प्रधानमंत्री

5. वैधानिक एवं राजनीतिक सम्प्रभुता :- वैधानिक सम्प्रभुता से अभिप्राय है वह सम्प्रभु जिसे कानून निर्माण तथा उसे लागू करने का सर्वोच्च अधिकार प्राप्त हो।
6. ब्रिटिश ससंद को वैधानिक सम्प्रभुता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है।
7. राजनीतिक सम्प्रभुता का अभिप्राय जनता के निर्वाचक मण्डल से है जिस पर वैधानिक सम्प्रभु का अस्तित्व कायम होता है।
8. डायसी :- "वैधानिक सम्प्रभु को राजनीतिक सम्प्रभु के आगे झुकना पड़ता है।"
9. लोकप्रिय सम्प्रभुता :- इसका अभिप्राय है जन साधारण की शक्ति अर्थात् जब शासन की अन्तिम शक्ति का प्रयोग जनता के द्वारा किया जाता है। वर्तमान में सम्प्रभुता का सबसे लोकप्रिय। सर्वमान्य रूप है।
10. रूसो लोकप्रिय सम्प्रभुता के सर्वश्रेष्ठ समर्थक है।
11. विधि सम्मत तथा तथ्य सम्मत सम्प्रभुता :- विधि सम्मत सम्प्रभु वह सम्प्रभु है जिसे राज्य के तहत कानून एवं सर्वोच्च शक्ति प्राप्त हो।
12. जिसे आज्ञा देने व आज्ञा का पालन करवाने का वैध अधिकार हो।
13. तथ्य सम्मत सम्प्रभु वह सम्प्रभु है जिसने शक्ति के बल पर शासन सत्ता पर आधिपत्य कर लिया हो। सम्प्रभुता का यह प्रकार क्रान्तियों के समय दिखाई देता है।
14. जैसे - वर्ष 1999 में पाक में नवाज शरीफ विधि सम्मत सम्प्रभु थे जबकि परवेज मुशरफ तथ्य सम्मत सम्प्रभु थे।

सम्प्रभुता के सिद्धान्त

(i) एकलवादी / वैधानिक सम्प्रभुता
(ii) बहुलवादी सम्प्रभुता

(i) एकलवादी सम्प्रभुता :- समर्थक - बोंदा, हॉब्स, बेन्थम, हिगल, ऑस्टिन आदि।

- ऑस्टिन को इस सम्प्रभुता का जनक माना जाता है।
- एकलवादी सम्प्रभुता के अनुसार राज्य की इच्छा का सर्वश्रेष्ठ रूप राज्य द्वारा निर्मित कानूनो में है जो कि सभी के लिए बाध्यकारी होता है।
- इनका मानना है कि राज्य एकमात्र सत्ता है जो कि समाज के लिए कानूनों का निर्माण करती है।
- सम्प्रभुता के एकलवादी सिद्धान्त का सर्वश्रेष्ठ प्रतिपादन ऑस्टिन ने अपनी पुस्तक "लेक्चरस ऑनज्यरिस प्रडेन्स" में किया।
- ऑस्टिन के अनुसार "ऊँचे के द्वारा निम्न को दिया गया आदेश ही कानून है।"
- यदि किसी समाज का अधिकांश भाग एक निश्चित मानव श्रेष्ठ की आज्ञा का पालन करता हो तथा उस मानव श्रेष्ठ को अन्य किसी की आज्ञा का पालन नहीं करनी हो तो वह मानव श्रेष्ठ सम्प्रभु तथा समाज स्वतंत्र एवं सभ्य समाज कहलायेगा।
- सम्प्रभुता की आलेचना हेनरी मेन एवं ग्रीन ने की।
- ग्रीन - राज्य का आधार शक्ति नहीं अपितु लोगों की सामान्य ईच्छा है।

(ii) बहुलवादी :- एकलवादी सम्प्रभुता के विशेष के विरोध में 20 वीं शताब्दी में बहुलवाद का उदय हुआ। बहुलवादी सम्प्रभुता राज्य को अन्य सामाजिक संस्थाओं के समान स्वीकार करता है।

- इनका मानना है कि आज्ञा पालन कराने की शक्ति केवल राज्य में निहित ना होकर समाज के अन्य समुदायों में भी निहित होनी चाहिए।
- प्रतिपादक - गिर्यक व मैटलैण्ड
- समर्थक - लॉस्की, मैकाइवर, लिण्डसे, क्रेब, बार्कर, मिस फॉलेट।

बहुलवाद की मान्यता

(I) राज्य तथा समाज पर्यायवाची नहीं है। राज्य समाज के अन्तर्गत एक समुदाय है। अतः सम्प्रभुता केवल राज्य में निहित ना होकर समाज के अन्य समुदायों में भी निहित होनी चाहिए।
(II) समाज के अन्य समुदाय भी अपना पृथक् अस्तित्व तथा इच्छा रखते है इसलिए उन्हें भी कानून निर्माण का अधिकार प्राप्त होना चाहिए।
(III) राज्य का कार्य ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना है जिससे व्यक्ति अपने अधिकतम विकास की प्राप्ति कर सके।

- लॉस्की :- पुस्तक — ग्रामर ऑफ पॉलिटिक्स, सॉवरेन्टी इन मोडर्न स्टेट
- इन्होनें कहा कि राजनीति के लिए यह स्थायी रूप से लाभदायक होगा कि सम्प्रभुता को हमेशा के लिए बाहर कर दिया जाए क्योंकि समाज संघात्मक है अतः सत्ता भी संघात्मक होनी चाहिए।
- पार्कर - सम्प्रभुता सम्पन्न राज्य का सिद्धान्त निर्जीव तथा निरर्थक हो गया है।

राजनीतिक सिद्धान्त

अर्थ एवं इसकी उपयोगिता

- राजनीति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु ने किया।
- राजनीति का संबंध मनुष्यों के सार्वजनिक जीवन से है।
- राजनीति एक मानवीय प्रकिया है। यह संघर्ष का परिणाम है।
- राजनीति एक प्रकार की जनसेवा है।
- प्राचीन यूनानी राजनीतिक वैज्ञानिक अरस्तु ने इसे 'Master Science' कहा है।

डेविड ईस्टन के अनुसार

''राजनीति का संबंध समाज में मूल्यों के अधिकारिक आवंटन से है।

- राजनीति शब्द अंग्रेजी के Politics का हिन्दी रूपान्तरण है जिसकी उत्पत्ति यूनानी भाषा (ग्रीक) के पॉलिस (Polics) शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – नगर राज्य।
- प्राचीन यूनान में नगर–राज्यों के नागरिक जीवन का अध्ययन करने वाले विषय को पॉलिटिक्स (राजनीति) कहा जाता था।

- सिद्धान्त शब्द यूनानी शब्द 'A Theoria' से बना है जिसका अभिप्राय एक केन्द्रित मानसिक दृष्टिकोण है जो एक वस्तु के अस्तित्व और उसके कारणों को प्रकट करती है।
- राजनीति के विविध पक्षों के व्यवस्थित अध्ययन को राजनीतिक सिद्धान्त कहा जाता है।

एण्ड्रू हैंकर के अनुसार

''राजनीतिक सिद्धान्त में तथ्य और मूल्य दोनों समाहित है दोनों एक – दूसरे के पूरक हैं।''

- राजनीतिक सिद्धान्त का सरोकार तथ्यों और मूल्यों दोनों से है, उचित और अनुचित की जाँच की जाती है और समाज के लिए उपयुक्त लक्ष्यों नीतियों एवं कार्यक्रमों की संस्तुति की जाती है।
- राजनीति सिद्धान्त के तीन प्रमुख कार्य हैं –
  1. वर्णन
  2. समालोचना
  3. पुनर्निर्माण

नोट – इनमें वर्णन का कृत्य राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में आता है। समालोचना और पुनर्निर्माण के कृत्य राजनीति दर्शन के क्षेत्र में आते हैं।

- इस प्रकार राजनीति – सिद्धान्त के दो मुख्य अंग हैं–
  1. राजनीति विज्ञान
  2. राजनीति दर्शन
- राजनीति विज्ञान के जनक अरस्तु है, उनका प्रमुख ग्रंथ 'The Politics' है।
- राजनीति विज्ञान का संबंध तथ्यों तथा यथार्थ से है, जिसमें राजनीति की व्याख्या की जाती है।
- राजनीति दर्शन के पिता प्लेटो है, जिसकी प्रमुख रचना 'The Republica' है।
- राजनीति दर्शन का संबंध मानक, मूल्यों व आदर्शों से है जिसमें समालोचना एवं पुनर्व्याख्या की जाती है।
- राजनीति सिद्धान्त उन विचारों और नीतियों को व्यवस्थित रूप को प्रतिबिम्बित करता है जिनसे हमारे सामाजिक जीवन, सरकार और संविधान ने आकार ग्रहण किया है।
- यह स्वतन्त्रता, समानता, न्याय, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता जैसी अवधारणाओं का अर्थ स्पष्ट करता है।
  - (i) आधुनिक काल में सबसे पहले रूसों ने सिद्ध किया कि स्वतंत्रता मानव मात्र का मौलिक अधिकार है।
  - (ii) कार्ल मार्क्स ने तर्क दिया कि समानता भी उतनी ही निर्णायक होती है जितनी की स्वतंत्रता।
  - (iii) गाँधी जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में वास्तविक स्वतंत्रता या स्वराज के अर्थ की विवेचना की।
  - (iv) अम्बेड़कर ने जोरदार तरीके से तर्क रखा कि अनुसूचित जातियों को अल्पसंख्यक माना जाना चाहिए और उन्हें विशेष संरक्षण मिलना चाहिए।
- इन विचारों ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्वतंत्रता और समानता को महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया।
- भारतीय संविधान के अधिकार वाले अध्याय में किसी भी रूप में छुआछूत का विरोध किया गया।
- गाँधी जी के सिद्धान्तों को नीति–निदेशक तत्वों मे शामिल किया गया।
- राजनीतिक सिद्धान्त ज्ञान तथा राजनीतिक चेतना की वृद्धि का महत्वपूर्ण साधन है।

प्लेटो ने कहा कि, ''ज्ञान ही सद्गुण है और सद्गुण ही ताकत है।''

- राजनीतिक सिद्धान्त दो प्रकार का होता हैं –
  1. परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त
  2. आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त

परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त

(i) राज्य के अध्ययन के रूप में (ब्लंटशली, गैरिस, गार्नर, गैटेल)

(ii) सरकार के अध्ययन के रूप में (पॉलजैमेट, लिकॉक, सीले)

(iii) राज्य और सरकार के अध्ययन के रूप में (डिमॉक, पॉलजैनेट)

(iv) राज्य, सरकार और व्यक्ति के अध्ययन के रूप में (लॉस्की, हर्मन, हेलर)

- डेविड ईस्टन तथा आमण्ड जैसे आधुनिक राजनीति शास्त्री राजनीति विज्ञान को राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन मानते हैं।
- हर्बर्ट साइमन जैसे विचारक राजनीति विज्ञान को निर्णय निर्माण का विज्ञान मानते हैं। लॉसवेल राजनीति विज्ञान को मूलतः एक नीति विज्ञान मानता है।
- आधुनिक सिद्धान्त के प्रमुख प्रतिपादकों में – डेविड ईस्टन, राबर्ट डहल, चार्ल्स मेरियम, केटिलन, लॉसवेल, आमण्ड ऐप्टर प्रमुख हैं।

  नोट – बकल का कथन है कि ''ज्ञान की वर्तमान स्थिति में राजनीति का विज्ञान होना तो दूर रहा, वह कलाओं में भी सबसे पिछड़ी कला है।''
- राजनीति विज्ञान तथ्यात्मक विज्ञान न होकर एक आदर्शात्मक विज्ञान अवश्य है। इसके प्रमुख समर्थकों मे अरस्तु, बोंदा, हॉब्स, मॉण्टेस्क्यू, ब्राइस, सिजविक, ब्लंटशली, जेलिनेक, डॉ. फाइनर, लास्की, बनार्ड शॉ, फ्रेडरिक पोलक आदि हैं।

- 'राजनीति विज्ञान' का सर्वप्रथम प्रयोग गॉडविन एवं मरे वुल्स्टोन क्राफ्ट ने किया।
- 1948 में यूनेस्को की एक कॉन्फ्रेंस में भी 'राजनीति विज्ञान' शब्द को प्राथमिकता दी गयी।
- अरस्तु ने बहुत पहले ही इसे 'सर्वोच्च विज्ञान', 'स्वामी विज्ञान' या 'आचार्य विज्ञान' तथा 'शीर्षस्थ विज्ञान वाला विज्ञान' कहा।
- प्लेटो जैसे प्राचीन यूनानी विद्वान ने भी अपने ग्रंथ 'स्टेट्समेन' में राजनीति को शासन की एक श्रेष्ठ कला के रूप में चित्रित किया है।
- कैटलिन और लासवेल – राजनीति विज्ञान को कला व विज्ञान दोनों का संगत मानते हैं।
- राजनीति सिद्धान्त का मुख्य विषय राज्य और सरकार है।
- राजनीतिक आन्दोलनों के पीछे सदैव एक विचारधारा का हाथ रहा है। अब तक जितने भी राष्ट्रीय आन्दोलन हुए तथा समाज में क्रांतियाँ लाई गयी, उन सबके पीछे राजनीतिक सिद्धान्तों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
- राजनीतिक सिद्धान्त वैज्ञानिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करने में सहायक होता है।
- राजनीतिक सिद्धान्त राजनीतिक आन्दोलनों में सहायक होते हैं।
- सामाजिक परिवर्तन को समझने और उसकी व्याख्या करने में राजनीतिक सिद्धान्त सहायक होते हैं।
- राजनीतिक सिद्धांत शासन प्रणालियों के लिए वैद्यता प्रदान करते हैं।

राज्य

- राज्य का अर्थ – अंग्रेजी शब्द State लेटिन भाषा के Status शब्द से निकला है जिसका अर्थ किसी व्यक्ति के सामाजिक से होता है जिसका बाद में अर्थ सारे समाज के स्तर से हो गया।
- 'राज्य' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु के द्वारा किया गया।
- सबसे पहले 16 वीं शताब्दी में इटालवी राजनीति विचारक निकोलो मैकियावेली (1469–1527) ने STATO शब्द का प्रयोग किया।
- इसी शब्द से STATE या राज्य शब्द की उत्पत्ति हुई।
- मैकियावेली ने राज्य की परीभाषा ऐसी सत्ता के रूप में दी जो मनुष्यों के ऊपर शक्ति का प्रयोग करती है।
- 16 वीं शताब्दी में फ्रांसीसी विचारक 'ज्यां बोंदा' ने राज्य के लिए रिपब्लिक शब्द का प्रयोग किया।
- गार्नर के अनुसार – ''राजनीति शास्त्र का प्रारम्भ व अन्त राज्य के साथ ही होता है।''
- हरबर्ट स्पेन्सर जैसे व्यक्तिवादी की दृष्टि में यह 'एक आवश्यक बुराई' है।
- मार्क्स के लिए राज्य एक वर्गीय संस्था है।
- यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तु राज्य के लिए Palis शब्द का इस्तेमाल करते हैं जिसका अर्थ है – 'नगर राज्य'।

राज्य उत्पत्ति के सिद्धान्त

1. दैवीय उत्पत्ति सिद्धान्त – (रॉबर्ट फिल्मर)

- यह सबसे प्राचीन सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त की प्रमुख मान्यता यह है कि राज्य ईश्वर द्वारा निर्मित संस्था है।
- सेंट आगस्टाइन ने अपने ग्रन्थ ''सिटी ऑफ गौड में राज्य को ईश्वरीय अनुकृति कहा है।
- मार्टिन लूथर ने राज्य को दैविक संस्था माना।

2. शक्ति सिद्धान्त (सर्वप्रथम – मैकियावेली)

वाल्टेयर ने लिखा कि ''प्रथम राजा एक भाग्यशाली योद्धा था।''

समर्थक – थ्रेसीमेकस, ओटंटो वॉन, बिस्मार्क, माओत्से तुंग।

आधुनिक विचारक – जैक्स, लासवेल, फैटलीन, E.H. कार, मार्गेन्थाऊ, रॉबर्ट डहल, कामटे, ब्लंटशली, ट्रीटस्के।

आलोचक – बोंदा, रूसो, हीगल, काण्ट, लीकॉक, ग्रीन जैसे आदर्शवादी विचारक।

3. पितृ प्रधान सिद्धान्त – 'सर हैनरी मैन' के ग्रन्थों – ''एनसिएस्ट लॉ'' और ''दा अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंस्टीट्यूशन्स'' में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।

समर्थक – लीकॉक, डिग्विट, हैनरी मैन, मैकाइवर, हेकिन्स।

आलोचक – मैक्लेनन, प्रो. गिलक्राइस्ट।

4. मातृ प्रधान सिद्धान्त – पितृ प्रधान सिद्धान्त जहाँ पिता की सत्ता को राज्य की उत्पत्ति का प्रारम्भिक तत्व मानता है। उसी प्रकार मातृ प्रधान सिद्धान्त की मान्यता है कि प्रारम्भिक समाज में माता की शक्ति की प्रधानता थी।

समर्थक – मैक्लेनन, जैक्स, मॉर्गन

आलोचक – विलोबी

5. सामाजिक संविदा का सिद्धान्त

समर्थक – हॉब्स, लॉक, रूसो

6. ऐतिहासिक या विकासवादी सिद्धान्त

समर्थक – मैकाइवर, सर हेनरी मैन, फ्रेडरिक एंजल्स, गार्नर, अरस्तु (समाजशास्त्री), बर्गेस, लीकॉक, गैटेल

नोट– बाकुनिन ने सर्वप्रथम समर्थन किया।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण – इन सिद्धान्तों में विकासवादी सिद्धान्त को राज्य की उत्पत्ति का अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय सिद्धान्त माना गया है।

सामान्य रूप से राज्य के चार तत्व माने जाते हैं –

1. जनसंख्या
2. भू–भाग
3. सरकार
4. सम्प्रभुता

1. जनसंख्या – (प्लेटो, रूसो, अरस्तु)

राज्य में कितनी जनसंख्या होनी चाहिए, यह निश्चित नही है।

- प्लेटो के अनुसार राज्य की जनसंख्या – 5040
- रूसो के अनुसार जनसंख्या – 10,000
- **गार्नर के अनुसार** – ''जनता राज्य के संगठन के निर्वाह के लिए संख्या में पर्याप्त होनी चाहिए तथा वह उससे अधिक नहीं होनी चाहिए, जितनी के लिए भूखण्ड तथा राज्य के साधन पर्याप्त हो।''

2. भू–भाग – 'क्लूबर' पहला लेखक था जिसने सन् 1817 में राज्य के लिए निश्चित भूमि का होना आवश्यक माना।

- लियॉन, डिग्वी, विलोबी, सीले, ये भू – भाग को अनिवार्य तत्व नहीं मानते।
- ब्लंटशली के अनुसार – ''जैसे राज्य का वैयक्तिक आधार जनता है उसी प्रकार उसका भौतिक आधार भू–भाग है।

3. सरकार (गार्नर) – सरकार राज्य की राजनीतिक संस्था है। यह राज्य की इच्छा को व्यक्त करती है।

4. संप्रभुता – सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

- **विलोबी के अनुसार** – ''प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोपरि इच्छा होती है।''

  प्रभुसत्ता दो प्रकार की होती हैं –

  1. बाह्य
  2. आंतरिक

- इसका तात्पर्य – राज्य पहले व्यक्ति बाद में
- राज्य साध्य व्यक्ति साधन मात्र है।

राज्य की प्रकृति

1. राज्य का सावयवी स्वरूप
2. राज्य का नैतिक स्वरूप
3. राज्य का वर्गीय स्वरूप
4. राज्य का कानूनी स्वरूप

सावयाव सिद्धान्त के समर्थक

- प्लेटो – ''राज्य व्यक्ति का वृहदत्तम रूप है।''
- प्लेटो ने राज्य की तुलना शरीर से की है। (आंगिक सिद्धान्त)
- राज्य बलूत के वृक्ष या चट्टानों से नहीं निकलता बल्कि यह उन लोगों के मस्तिष्क व चरित्र का परिणाम है जो उसमें निवास करते हैं।
- अरस्तु – ''राज्य व्यक्ति का पूर्व गामी है।''
  राज्य परिवारों तथा गाँवों का समूह है जिसका उद्देश्य पूर्ण व आत्मनिर्भर जीवन की स्थापना करना है।
- ब्लंटशली – ''राज्य पुल्लिंग, चर्च स्त्रीलिंग''
  - ब्लंटशली – ''राज्य मानव शरीर का हूबहू रूप है।
  - अन्य समर्थक – आदर्शवादी – (हीगल, ग्रीन, काण्ट)
- **यांत्रिक सिद्धान्त के समर्थक** – लॉक व अन्य उदारवादी पूँजीवादी विचारक।
- समझौता वादी विचारक (हॉब्स, लॉक, रूसो) इस विचार के जनक माने जाते हैं।
- टॉमस हॉब्स और लॉक ने राज्य को मनुष्यों की इच्छा के परिणाम सिद्ध करने के लिए 'सामाजिक समझौते' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

उदारवादी – व्यक्तिवादी सिद्धान्त

- उदारवादी – व्यक्तिवादी सिद्धान्त राज्य के यंत्रीय सिद्धान्त का परिणाम है।
- इसके अनुसार राज्य का निर्माण सब व्यक्तियों ने मिलकर व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से किया है, अतः राज्य एक साधन है, व्यक्ति उसका साध्य है।
- जॉन लॉक को उदारवाद का जनक माना जाता है।
- इसके प्रमुख समर्थक – जॉन लॉक, एडम स्मिथ, जरमी बेन्थम, हर्बर्ट स्पेन्सर।

  नोट – एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। उसने अपनी पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में 'अहस्तक्षेप की नीति' और व्यक्तिवाद का प्रबल समर्थन किया है।

सामाजिक लोकतंत्रीय सिद्धान्त

उदारवादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत सामाजिक लोकतंत्रीय सिद्धान्त राज्य के अहस्तक्षेपवादी सिद्धान्त का खण्डन करते हुए नागरिकों के कल्याण के लिए राज्य की सकारात्मक भूमिका के महत्व पर जोर देता है।

इसका मुख्य प्रतिपादक – एच. जे. लास्की है।

समर्थक – जे. एस. मिल, टी. एच. ग्रीन, हॉब हाउस।

मार्क्सवादी सिद्धान्त

- यह सिद्धान्त राज्य को मानव कल्याण की इकाई न मानकर शोषण का यंत्र मानता है।
- प्रवर्तक – कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंजल्स, लेनिन

नोट –

मार्क्सवादी	– राज्य साधन
अराजकतावादी	– राज्य साधन
आदर्शवादी	– राज्य साधन
फासीवादी	– राज्य साधन

- **विलोबी के अनुसार** – राज्य के तीन तत्व होते हैं –
  1. जनसमुदाय
  2. शासन तंत्र या सरकार
  3. लिखित या अलिखित संविधान
- **ब्लंटशली के अनुसार –**
  1. भूखण्ड
  2. जनता
  3. एकता
  4. संगठन
- **सिजविक के अनुसार –**
  1. मनुष्यों का एक समुदाय।
  2. एक प्रदेश जिसमें वे स्थायी रूप से रहते हो।
  3. आंतरिक सम्प्रभुता तथा बाह्य नियंत्रण से स्वतंत्रता।
  4. एक राजनीतिक संगठन।
- **प्राचीन भारतीय विचारकों के अनुसार –**
  1. स्वामी
  2. अमात्य (मंत्री)
  3. जनपद (राष्ट्र)
  4. दुर्ग
  5. कोष
  6. दण्ड
  7. मित्र
- **सामान्य रूप से राज्य के चार तत्व –**
  1. जनसंख्या
  2. भू–भाग
  3. सरकार
  4. सम्प्रभुता

नोट – वर्तमान राज्य की अवधारणा वेस्टफेलिया की इस सन्धि पर आधारित है कि दुनिया सम्प्रभु राज्यों से बनी है और सम्प्रभु राज्यों में बँटी हुई है।

मैकाईवर – ''राज्य विधि का शिशु व जनक दोनों है।''

मैक्स बेवर – ''राज्य वह इकाई है जिसके पास दण्डकारी शक्ति का एकाधिकार है।

हीगल – ''राज्य पृथ्वी पर ईश्वर का अवतरण है।''

बोंदा – ''राज्य परिवारों व उनकी सामान्य संपत्तियों का ऐसा समूह है जो सर्वोच्च शक्ति व विवेक द्वारा शासित होता है।''

उदारवाद (राज्य की प्रकृति) उदारवाद (राज्य की प्रकृति)

परम्परागत/नकारात्मक उदारवाद	आधुनिक/सकारात्मक उदारवाद	समकालीन उदारवाद
↓ व्यक्तिवाद पर बल ↓ (अणुवादी) • समाजवाद के विपरीत • विकास 17/18 वीं सदी • समर्थक – लॉक स्पेन्सर आर्थिक क्षेत्र में → एडम स्मिथ, माल्थस, रिकार्डो रात्रि प्रहरी/पुलिस राज्य (स्वेच्छातंत्र वाद) नव उदारवाद	↓ कल्याणकारी राज्य • सार्थक हस्तक्षेप • विकास – 19 /20वीं सदी • समर्थक – J.S. मिल, ग्रीन, लास्की, मैकाईवर, बार्कर, हॉब हाउस, G.D.H. कॉल, टॉनी • आर्थिक क्षेत्र में – कीन्स • समतावाद उदारवाद	नव उदारवाद • 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आया • समर्थक– नॉजिक, हैयक, बर्लिन, फीडमैन सेन (समर्थक) समतावाद ↓ डार्विन, मैकफर्सन अमर्त्य

- ''राज्य एक आवश्यक बुराई हैं।'' (स्वेच्छातंत्रवादी)

नोट

- 1688 की ब्रिटेन की गौरवपूर्ण क्रान्ति को प्रथम उदारवादी क्रान्ति कहा जाता है जिसने लॉक जैसे महान उदारवादी को पैदा किया।
- Liberalism शब्द की उत्पत्ति लेटिन शब्द Liber से हुई है जिसका तात्पर्य है – स्वतंत्रता या आजादी।
- ''व्यक्ति की स्वतंत्रता व गरिमा उदारवाद की आत्मा है।''

1. परम्परागत/नकारात्मक उदारवाद – परम्परागत उदारवाद समानता की बजाय स्वतंत्रता पर बल देता है।

- परम्परागत उदारवाद अणुवादी (व्यक्तिवादी) समाज का समर्थन करता है।

नोट – उपयोगितावादी (बैंथम मिल) – हालाँकि यह लॉक के प्राकृतिक अधिकारों की हँसी उड़ाता है, परन्तु फिर भी उदारवादी व्यक्तिवाद दृष्टिकोण का एक रूप है।

2. **आधुनिक/सकारात्मक उदारवाद** – 1860 के दशक के बाद सकारात्मक उदारवाद का उदय हुआ।
   इसके उदय में निम्न कारक उत्तरदायी थे –
   1. मार्क्स की लाल क्रान्ति का भय।
   2. 1917 में रूस की साम्यवादी क्रान्ति।
   3. J.S. मिल के राज्य के सकारात्मक हस्तक्षेप के विचार।
   4. ग्रीन द्वारा तीन सामाजिक बुराईयों (अज्ञानता, नशाखोरी, निर्धनता) के उन्मूलन हेतु राज्य की सकारात्मक कार्यवाही।
   5. कीन्स का कल्याणकारी आर्थिक दर्शन
   6. बेवरीज रिपोर्ट (राज्यवाद)

   ग्रीन – ''राज्य का आधार इच्छा हो न कि शक्ति''

कल्याणकारी राज्य

- कल्याणकारी राज्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग – आर्कविश्व टैम्पिल द्वारा।
- पुस्तक – सिटीजन एण्ड चर्च मैन।
- बैवरिज रिपोर्ट (1943) की सिफारिशों को IInd world war के बाद आयी कलीमेंट एटली की सरकार ने लागू किया।
- अतः ब्रिटेन को कल्याणकारी राज्य का घर कहा जाता है।
  नोट – इग्लैण्ड में इसका मुख्य समर्थक लास्की व अमेरिका में मैकाईवर था जिसने सेवाधर्मी राज्य का समर्थन किया।
- सकारात्मक उदारवाद जब समाजवाद के निकट पहुँच जाता है तो इसे इंग्लैण्ड में फैबियनवाद जबकि अन्य देशों में प्रजातांत्रिक समाजवाद कहा जाता है।

  नोट – F.A. हेयक ने मुक्त आर्थिक क्षेत्र व राज्य के समाज कल्याणकारी कार्यों से हाथ वापिस खींचने (Rolling back the state) जैसे विचारों को इंग्लैण्ड में 80 के दशक में मार्गेन्ट थैचर व U.S.A. में राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने समर्थन दिया।
- इसी से L.P.G. (उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण) का आरम्भ हुआ तथा W.T.O. जैसा संगठन अस्तित्व में आया।

2. अधिकार

- अधिकार लोकतंत्र की मूल मान्यता है और यह परम्परागत दृष्टिकोण से संबंधित है।

अर्थ

- अधिकार आत्म विकास के वे दावे हैं जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त तथा राज्य द्वारा समर्थित है।
- ''अधिकार सामाजिक जीवन की वे परिस्थितियाँ है जो व्यक्ति के पूर्व विकास के लिए आवश्यक है।''– **लास्की**
- ''आज के नैतिक दावे कल के अधिकार है।''– **ग्रीन**

नोट – ग्रीन अधिकारों को बाह्य स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित करता है।

विकास

नैतिक अधिकार → नागरिक अधिकार → राजनीतिक अधिकार → सामाजिक आर्थिक अधिकार → सांस्कृतिक अधिकार → पर्यावरणीय अधिकार

Trick-
नै ना रा सा सांप

अधिकारों का वर्गीकरण

1. नकारात्मक/सकारात्मक अधिकार
2. मौलिक/संवैधानिक अधिकार/कानूनी अधिकार
3. नरम/कठोर अधिकार
4. नागरिक/मानवीय अधिकार

1. नकारात्मक/सकारात्मक अधिकार

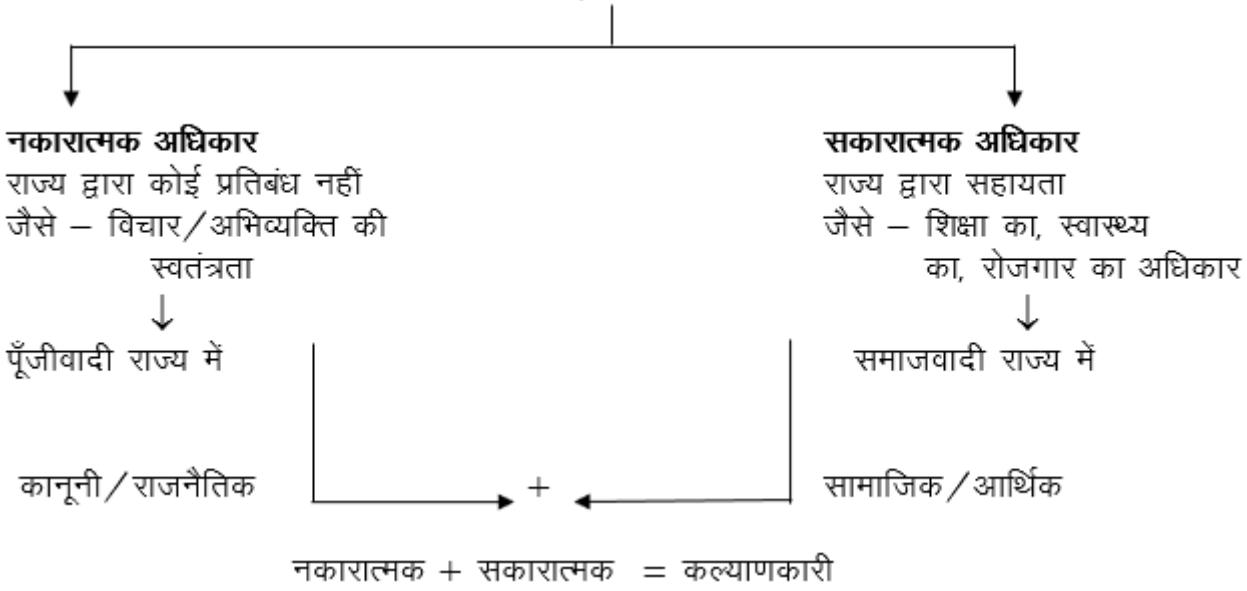

नकारात्मक + सकारात्मक = कल्याणकारी

2. मौलिक अधिकार/संवैधानिक अधिकार/कानूनी अधिकार

मौलिक अधिकार	संवैधानिक अधिकार	कानूनी अधिकार
• जैसे– भारतीय संविधान के भाग III में	• संविधान में उल्लेख परन्तु वाद योग्य नहीं	• जिनका उल्लेख संविधान में प्रत्यक्ष रूप में नहीं होता हैं।
• सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संरक्षण	• जैसे – भाग IV में	• संसदीय अधिनियम द्वारा निर्मित हैं।
• वाद योग्य होते हैं।	• सभी मूल अधिकार संवैधानिक अधिकार है लेकिन सभी संवैधानिक अधिकार मूल अधिकार नहीं हैं।	• सूचना का अधिकार • सम्पत्ति का अधिकार

3. नरम/कठोर अधिकार

4. नागरिक/मानवीय अधिकार

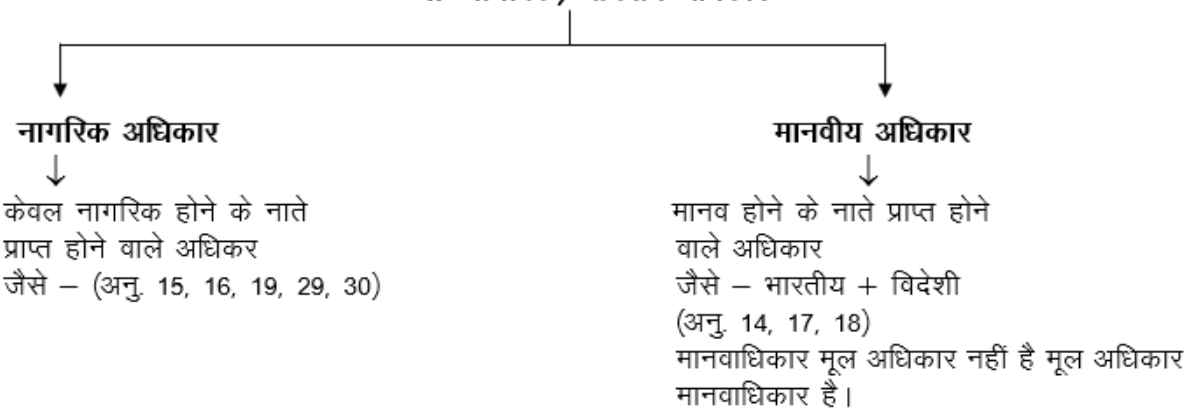

अन्य प्रकार से बँटवारा

- नैतिक अधिकार
- नागरिक अधिकार
- राजनीतिक अधिकार
- सामाजिक आर्थिक अधिकार
- सांस्कृतिक अधिकारें
- पर्यावरणीय अधिकार

Toppersnotes Unleash the topper in you

1. **नैतिक अधिकार**
   - बुजुर्गों, बच्चों की देखभाल का अधिकार
   - शिक्षक को सम्मान पाने का अधिकार
2. **नागरिक अधिकार**
   - कानून के समक्ष समानता का अधिकार
   - जीवन का अधिकार
   - विचार/अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार
   - संपत्ति का अधिकार
   - धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
3. **राजनीतिक अधिकार**
   - लोकतंत्रीय/उदारवादी व्यवस्थाओं में
   - वोट देने का (एक व्यक्ति, एक वोट, एक मोल – बेंथम)
   - चुनाव लड़ने का अधिकार
   - सार्वजनिक नियुक्ति पाने का अधिकार
   - सरकार का विरोध या समर्थन करने पर अधिकार
   - सार्वजनिक नीति–निर्माण व कार्यों में सहभागिता का अधिकार
4. **सामाजिक–आर्थिक अधिकार**
   - समाजवादी – कल्याणकारी व्यवस्थाओं में
   - (रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार)
5. **सांस्कृतिक अधिकार**
   - बहुसंस्कृतिवादी
   - अपनी भाषा, लिपि व संस्कृति का अधिकार
6. **पर्यावरणीय अधिकार**
   - वर्तमान में ज्वलंत मुद्दा
   - शुद्ध हवा, शुद्ध पर्यावरण, परमाणु मुक्त विश्व

अधिकारों के सिद्धान्त

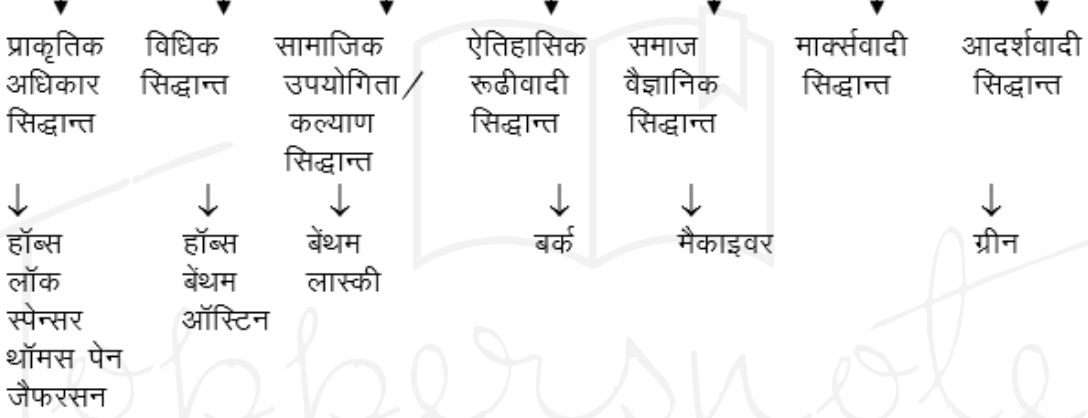

1. प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धान्त

- ईश्वर प्रदत्त, राज्य से पूर्व छीने नहीं जा सकते हैं।
- राज्य का निर्माण अधिकारों की रक्षा हेतु।
- **समर्थक** –
  - हॉब्स – आत्म रक्षा का अधिकार
  - लॉक – जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति का अधिकार
  - थॉमस पेन – पुस्तक - Rights of the man common sence
  - जैफरसन – या स्वतंत्रता दो या मौत दो।
- **तीनों क्रान्तियाँ** –
  1. गौरवपूर्व क्रान्ति (1688)
  2. अमेरिकी क्रान्ति (1776)
- नारा – जीवन स्वतंत्रता, सुख
  3. फ्रांसीसी क्रान्ति – (1789)
- नारा – स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व
- मानवाधिकार – 10 दिसम्बर, 1948 सार्वभौम घोषणा
- आर्थिक क्षेत्र में – एडम स्मिथ, माल्थस, रिकार्डो
- आलोचना
  - कट्टर आलोचक – बेंथम
  - ''प्राकृतिक अधिकार बकवास है, बकवासों से बढ़कर बकवास है।''
  - अलंकारिक बकवास/बैसाखियों की बकवास।

2. अधिकारों का विविध/कानूनी सिद्धान्त

- प्राकृतिक अधिकारों का उल्टा।
- अधिकार राज्य की देन है, ईश्वर की नहीं।
- अधिकार विधि या कानून द्वारा समर्थित/सीमित नहीं होते हैं।
- इस सिद्धान्त के अनुसार प्रभुसत्ता राज्य में निहित है और कार्यपालिका उसका प्रयोग करती है। अतः अधिकार कार्यपालिका के आदेश की देन है।
- बेंथम + ऑस्टिन – ''कानून/राज्य सम्प्रभु के आदेश है।''

toppersnotes unleash the topper in you